

विकास अग्रवाल 'बिंदल'

भोपाल, मध्यप्रदेश

ग़ज़ल

तेरे तीर-ओ-क़मान की बातें
दिल के ज़ख़्म-ओ-निशान की बातें

ख़ानदानी बनो मेरे बच्चों
सीख लो ख़ानदान की बातें

बाप-दादा ने ये सिखाया है
घर न आएँ दुकान की बातें

घर से मतलब है अपने मुझको बस
क्यों करूँ मैं ज़हान की बातें

दिल तो बस प्यार चाहता है मगर
ज़ेहन करता है मान की बातें

ये मुहब्बत है या पढ़ाई है
क्यों करे इम्तिहान की बातें

इश्क़ मुझको ज़मीं से है 'बिंदल'
तू करे आसमान की बातें

प्यार की दिल में जब उमंग नहीं
बेसबब करते हम भी तंग नहीं

तुम इसे ज़ेहन में बिठा लेना
हम सुकूँ चाहते हैं जंग नहीं

सरहदों पर जो होगी होली तो
ख़ून होगा फिर उसमें रंग नहीं

रात भर जाग सुबह सोते हो
ऐश-ओ-आराम का ये ढंग नहीं

दोस्तों के हवाले मत करना
ज़िंदगी है कोई पतंग नहीं

दिल के अरमान मर गए शायद
उठती सीने में अब तरंग नहीं

अपनी मर्ज़ी से जी सके 'बिंदल'
कोई इतना भी अब मलंग नहीं